om-20a_Page 1 and 2 1/20/2014 7:58 PM Page 9

दिल्ली-किंग्सवे कैंप। संत निरंकारी मिशन के हरदेव सिंह जी महाराज को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.साधना।

दिल्ली–उत्तम नगर। "एलिमिनेशन ऑफ वायलेंस अगेंस्ट वुमेन" कार्यक्रम के दौरान ब्र.कु.चक्रधारी को किरण लाइफटाइम एचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित करते हुए मौदूद अतिथि तथा अन्य।

डिंडोरी-म.प्र.। नवनिर्वाचित एम.एल.ए ओंकार मकरम का सम्मान करने के पश्चात समूह चित्र में ब्र.कु.संगीता, जे.पी.गुप्ता, ब्र.कु.राजमोहिनी तथा अन्य।

ग्वालियर। गोदरेज कनज़्यूमर प्रोडक्ट्स, मालनपुर में "माइंड मैनेजमेंट" पर वर्कशाप कराने के पश्चात ब्र.कु.प्रहलाद, ब्र.कु.ज्योति तथा अन्य।

विंद्याचल नगर-इंदौर। 12 दिवसीय "खुशनुमः ज़िंदगी" शिविर का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.प्रतिमा, ब्र.कु.सीमा, विपिन भावसर तथा अन्य।

कोरबा। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में विधायक जयसिंह अग्रवाल, ब्र.कु.रुक्मणि तथा अन्य।

अहंकार पतन की जड़ है, समर्पणता उन्नति की सीढ़ी

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

भगवान ने गीता में यह उपदेश देते हुए कहा है कि अपने स्वभाव और विकास की स्थिति को पहचान, प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वाभाविक कर्म का, निष्ठापूर्वक पालन करना चाहिए। परंतु इसमें ईश्वर अर्पण भावना से कार्य करने में अहंकार सर्वथा लुप्त हो जाता है। अहंकार को जीतने की यही विधि है कि परमात्मा करनकरावनहार है और इसलिए जब कर्म करने के बाद भी वो भाव अंदर में निर्मित होता है कि ये ईश्वर अर्पण है, तो उसमें अहंकार लुप्त होने लगता है। अहंकार के अभाव से पूर्वार्जित वासनाओं का क्षय होता है और नवीन बंधनकारक वासना उत्पन्न नहीं होती है। क्योंकि अहंकार ही सभी कमजोरियों की जड़ है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, आलस्य ये सब की जड़ अहंकार है। अगर उस अहंकार को इंसान जीत ले तो इन सभी विकारों को जीतना आसान हो जाता है। क्योंकि बीज को ही खत्म कर दिया, तो बीज से उत्पन्न सारी बातें स्वत: समाप्त हो जाती हैं। इसलिए कहा कि नवीन बंधनकारक वासनायें भी उत्पन्न नहीं होती हैं। इसके अतिरिक्त चित्त की शुद्धि भी प्राप्त होती है। जितना व्यक्ति अहंकार को जीत सकता है, उतना उसकी आंतरिक चित्त की शुद्धि होने लगती है। जिसका अंत:करण शुद्ध होता है, वह परमात्मा के दिव्य स्वरूप का अनुभव प्राप्त कर सकता है। यही वास्तविक सिद्धि है। यह तभी हो सकता है, जब व्यक्ति अपने अहंकार को संपूर्ण रीति से जीत लेता है।

भगवान ने सर्वोच्च सिद्ध अवस्था अर्थात् ज्ञान की पराकाष्ठा प्राप्त करने वालों के लक्षण बताए हैं। अपनी बुद्धि से शुद्ध होकर तथा धैर्य पूर्वक मन को वश करते हुए इंद्रिय तृप्त विषयों का त्याग कर राग-द्वेष से मुक्त होकर जो व्यक्ति एकांत स्थान में वास करता है, जो अल्पाहारी हो, जो अपने शरीर, मन, वाणी को वश में रखता है, जो सदैव समाधी में रहता है तथा पूर्णत: विरक्त, मिथ्या अहंकार, मिथ्या शक्ति, मिथ्या गर्व, काम, क्रोध तथा भौतिक वस्तुओं के संग्रह से मुक्त है। जो मिथ्या स्वामित्व की भावना से रहित है तथा शांत है वह निश्चय ही आत्म साक्षात्कार के पद को प्राप्त होता है। इस प्रकार जो दिव्य पद पर स्थित है, वह सर्वोच्च सिद्ध अवस्था का अनुभव करता है और प्रसन्न हो जाता है। वह न शोक करता है, न किसी की कामना करता है और वह प्रत्येक जीव के प्रति समभाव अर्थात आत्म-भाव को विकसित करता है। ये सिद्ध अवस्था की या ज्ञान की पराकाष्ठा की स्थिति के लक्षण हैं। अर्जुन यहां फिर एक प्रश्न पूछता है।

प्रश्न:- ज्ञान की पराकाष्ठा क्या है?

उत्तर:- भगवान कहते हैं - जब तुम्हारी अवस्था परिपक्व हो जाती है तब भगवान, जो अलौकिक प्रभाव वाले हैं, अजर, अमर, शाश्वत् गुणधर्म वाले हैं, उसे यथार्थ जान लेते हो। ये है ज्ञान की पराकाष्ठा अर्थात् परमात्मा के प्रति कोई मतभेद या कोई उलझन नहीं रहती है, परमात्मा जो है जैसा है उस स्वरूप में उसको जान लेना उसको प्राप्त करने बराबर हो जाता है। वह भगवान का आश्रय लेने वाला पुरूष संपूर्ण कर्म को सदा करते हुए, ईश्वरीय कृपा में सदा रहने वाले, अविनाशी पद को प्राप्त करता है। इसलिए हे अर्जुन, संपूर्ण कर्म को मन से मुझे अर्पित करके बुद्धियोग मुझमें स्थित करो। इस प्रकार निरंतर मुझमें चित्त लगाने वाला मेरी कृपा से सर्व विघ्नों को पार कर लेता है। परमात्मा ने यही बताया। कई बार कई आत्मायें ये सोचती हैं कि भगवान की कृपा मेरे ऊपर क्यों नहीं होती है। तो भगवान ने इसका भी रहस्य बता दिया कि भगवान की कृपा किस पर होती है। जो निरंतर चित्त लगाने वाला है वह मेरी कृपा से सर्व विघ्नों को पार कर लेगा। परंतु यदि अहंकार वश तुम मेरी मत नहीं सुनोगे तो नष्ट हो जाओगे। क्योंकि तुम्हारी प्रकृति अर्थात् संस्कार तुम्हें प्रवृत्त होने के लिए मजबूर करेगें। कौन से संस्कार? जो अशुद्ध संस्कार हैं वह उसी दिशा में प्रवृत्त होने के लिए हमें मजबूर करते रहेंगे।

जैसे आजकल की दुनिया के अंदर हम ये बात बार-बार सुनते हैं कि कोई व्यक्ति कहता है कि मैं गुस्सा करना चाहता नहीं हूँ लेकिन आ जाता है, तो ये बात क्या सिद्ध करती है? कि गुस्सा करना चाहता नहीं हूँ, क्रोध करना चाहता नहीं हूँ लेकिन क्रोध आ जाता है अर्थात् वो प्रकृति, वो संस्कार उसको मजबूर कर रहा है। गुस्सा करने के लिए। तो इस प्रकार कमजोरी के संस्कार हमें अपनी तरफ खीचेंगे और मजबूर करेंगे। जो कमजोरी के संस्कारों के वश जीवन जीता है, उसकी गति क्या हो सकती है, वह नष्ट हो जायेगा। वो परमात्म कृपा को अनुभव नहीं कर पाता है। इसलिए हे भारत, यहां अर्जुन को भारत क्यों कहा गया, क्योंकि एक अर्जुन की बात नहीं है, सारे भारतवासी अर्जुन हैं। इसलिए हे भारत, सभी भारतवासी संपूर्ण भाव से उस ईश्वर की शरण ग्रहण करो, उसकी कृपा से परम शांति को प्राप्त करो और इस प्रकार अपनी कमजोरी के जो संस्कार हैं, स्वभाव हैं, उसको खत्म कर दो, ताकि वो हमें मजबूर न करे प्रवत्त होने के लिए। उसी के साथ भगवान कहते हैं इस प्रकार ये गुह्य गोपनीय ज्ञान मैने तेरे लिए कहा है। इसलिए मैं तेरे हित के लिए कहूंगा। भगवान यहां दोस्ती का भाव व्यक्त करते हैं और कहते हैं - तू मेरा मित्र है, अति प्रिय है इसलिए मैं तुम्हें हित की बात ही कहूंगा। इस पर पूर्ण विचार करने के पश्चात् तेरी जैसी इच्छा हो वैसा करना। इतना कहकर भगवान भी न्यारा हो जाता है। इतनी अच्छी ज्ञान की बात सुनाने के बाद भी हमारे ऊपर वह थोपने का प्रयास नहीं करता है, कितनी निर्माणता व्यक्त करते हैं । वे हमें सिखाने का प्रयत्न करते हैं। इतना न्यारा, निराला है परमात्मा।

पिताश्री के साथ के अविस्मरणीय पल

पिताश्री ने मुझे पारलौकिक संसार में पहुँचा दिया

लन्दन से ब्र.कु. जयन्ती बहन जी अपना अनुभव इस प्रकार लिखती हैं कि मैं जब सन् 1968 में बाबा से मिली तो बाबा ने पूछा- बच्ची, तुमको क्या करना है? मैंने कहा-बाबा, मुझे समर्पित होना है। बाबा ने बड़ी मीठी दृष्टि दी और कहा - आज रात्रि को बाबा को गुडनाइट करने आना। रात्रि को आँगन में बाबा खटिया पर बैठे थे, साथ में कई दादियाँ और भाई-बहनें भी थे। मैं और दादी जानकी भी पहुँचे। देखा वहाँ लाइट ही लाइट चमक रही थी। बाबा के खटिया के पास मोतिया के खुशबूदार फूल रखे थे और बाबा सबको दृष्टि दे रहे थे। जब मैं बाबा के सम्मुख गई तो बाबा ने मुझे फूल दिये और दृष्टि दी तो मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि चुम्बक ने मुझ आत्मा को अपनी ओर खींच वतन में उड़ा दिया। मैं आत्मा, ज्योति की दुनिया में पहुँच गयी। बाबा ने मुझे पारलौकिक संसार में पहुँचा दिया। कुछ समय के बाद इस साकार दुनिया का आभास हुआ। देखा तो बाबा बड़े प्यार से दृष्टि दे रहे थे। बाबा ने पूछा- बच्ची, बाबा क्यों दृष्टि दे रहे हैं? दादी जानकी ने कांध हिलाते हुए इशारे से कहा-हम जानती हैं कि अब पुरानी दुनिया से मरना है और बाबा की गोद में अलौकिक जन्म लेना है।

ब्र.कु.जयन्ती यूरोप में ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्रों की मुख्य निदेशिका

पिताश्री जी ने मुझे 'ज्ञान-बुलबुल' का टाइटल दिया

जर्मनी की ब्र.कु. सुदेश बहन अपना अनुभव इस प्रकार सुनाती हैं कि मुझे समाज सेवा का बहुत शौक था। एक दिन घर पर मेरी मौसी आयी। जब हम दोनों टहलने गये तो मैंने उनके सामने अपने मन की इच्छा रखी कि मैं समाज सेवा करना चाहती हूँ। उन्होंने कहा कि तुम्हें सच्ची समाज सेवा करनी है । मेरे घर पर आओ, वहाँ नज़दीक मार्केट में ब्रह्माकुमारी आश्रम है, वहाँ जाकर सीखो। मैं देखती हूँ कि लोग उनके पास रोते हुए जाते हैं और मुस्कराते हुए लौटते हैं। उनके जीवन में परिवर्तन आ जाता है। अगर तुमको समाज सेवा करनी है तो उन जैसी सेवा करो जो किसी के दु:ख मिट जायें और वह सुखी बन जाये तथा दूसरों का भी जीवन बना दे। सन् 1967 की बात है। मैं दिल्ली से मधुबन आयी थी। रात को हिस्ट्री हॉल में अनुभव सुनाने लगी तो मुझे खड़ाऊँ की आवाज़ सुनायी पड़ी। मैंने समझा कि बाबा आ गये, तो मैं चुप हो गयी। बाबा आये नहीं तो मैंने समझा यह मेरा भ्रम होगा। फिर सुनाना शुरू किया। थोड़े समय के बाद बाबा अन्दर आये और मेरे से कहने लगे कि 'ज्ञान-बुलबुल' क्या गीत गा रही थी? बहुत अच्छा गीत गा रही थी। बाबा के यह महावाक्य भी मेरे लिए वरदान बन गये। तब से मुझे जो प्वाइंट्स अच्छी लगती थी उनको पहले अन्दर में गुनगुनाती थी और बाद में गीत की तरह सुनाती थी। इस तरह मुझमें ज्ञान का रस भर गया। बाबा के इस वरदान से मुझे ऐसे लगने लगा कि मैं ज्ञान को गुनगुना रही हूँ और गीत के रूप में दूसरों को सुना रही हूँ। बाबा ने मुझे 'ज्ञान-बुलबुल' अथवा 'ज्ञान-नाइटिंगेल' का टाइटल दिया।

ब्र.कु.सुदेश जर्मनी में ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्रों की मुख्य निदेशिका